ये सागर है

परिकल्पना

राघवेन्द्र प्रसाद तिवारी

Scanned with OKEN Scanner

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© डॉ. हरीसिंह गौर के. वि.वि. सागर (म.प्र.)

प्रथम संस्करण : 2019

ISBN 978-93-89341-04-1

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-22825424, 09350809192

www : anuugyabooks.com

मूल्य : 850 रुपये

आवरण

गोविन्द सरवैया

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

YE SAGAR HAI

Collection of Essays & Memoirs of Sagar

edited by **Dr. Suresh Acharya & Dr. Laxmi Pandey**

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

प्रस्तावना	–प्रो. राघवेन्द्र प्रसाद तिवारी	9
मेरी ओर से–	–सुरेश आचार्य	14

खंड अ
सागर : इतिहास और संस्कृति

1. मेरा बचपन	–डॉ. हरीसिंह गौर	19
2. झील से उगता शहर	–रजनीश जैन	28
3. भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष और सागर	–डॉ. ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव	35
4. इतिहास के पन्नों में सागर		70
❐ सागर की सूबेदारी		70
❐ सागर जिला		72
❐ छत्रसाल और सागर		73
❐ छत्रसाल के वंशज (गढ़ाकोटा)		76
❐ किले और इमारतें		80
❐ जनपदीय सिक्के		80
❐ सूर्य मन्दिर		81
❐ जैन तीर्थ		82
❐ रहली की साँस्कृतिक धरोहर	–डॉ. श्याम मनोहर पचौरी	84
❐ गढ़पहरा : एक दर्शनीय स्थल	–सुधीर साहू	89
❐ पीली कोठी वाले बाबा : सागर की रूहानी पहचान	–डॉ. अफरोज बेगम	92
❐ कबीर साहेब आश्रम : सागर	–अवधेश कुमार	95
❐ राहतगढ़ दुर्ग : एक परिचय	–अभिषेक दांगी	98
❐ ऐतिहासिक नगर : एरण	–डॉ. रवीन्द्रनाथ अग्रवाल	101
❐ देवलचौरी की रामलीला : रामकथा को जीने का अहसास	–डॉ. महेश तिवारी	105

Scanned with OKEN Scanner

- ❐ प्राचीन पजनारी ग्राम का पुरातत्वीय अध्ययन —रवीन्द्रनाथ अग्रवाल 108
5. दो-दो मुख्यमन्त्रियों को देने वाला शहर है सागर! —डॉ. दीपक तिवारी 113
6. सागर की भू-आकृतियाँ : नगरीय विस्तार —प्रो. पुरुषोत्तम सोनी 120
7. भारत में हिन्दी पत्रकारिता और पत्रकारिता में सागर —डॉ. राकेश शर्मा 129
8. सागर : मेरा सागर —सुरेश आचार्य 136
9. सागर के प्रमुख आधुनिक साहित्यकार—आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 146
10. सागर जिले के कलम के सिपाही —बृन्दावन राय 'सरल' 170
11. ई.एम.आर.सी. सागर : सार्थकता और रचनात्मक सृजन के नवीन सोपान —डॉ. पंकज तिवारी 188
12. सागर क्षेत्र में रंगकर्म —राकेश सोनी 194
13. अतीत से अब तक—साहित्यिक गतिविधियाँ —मणिकांत चौबे 'बेलिहाज' 200
14. ए ग्रेट बैंच मार्क : ब्रिटिश हुकूमत ने अफगान, बर्मा, श्रीलंका का केन्द्र बिन्दु सागर के कैन्ट एरिया में किया था चिन्हित —अभिषेक यादव 205
15. सागर के मायने —लक्ष्मी पाण्डेय 206

खंड ब

सागर : मील के पत्थर

1. पद्माकर 211
2. उद्भट विद्वान डॉ. हरीसिंह गौर —शम्भुदयाल गुरु 217
3. डॉ. हरीसिंह गौर दमड़ी दमड़ी माया जोड़ी —कान्तिकुमार जैन 221
4. रविशंकर शुक्ल का आरम्भिक जीवन 229
5. मीर कवि —पद्मश्री पं. मुकुटधर पाण्डेय 232
6. कम खाना, सागर में रहना और पढ़ना-लिखना अर्थात् जहूरबख्श—डॉ. बलभद्र तिवारी 234

7. बुन्देलखंड के वयोवृद्ध क्रान्तिवीर भाई अब्दुल गनी से बातचीत —राजीव दुबे 'राजिम' 244
8. आचार्य पं. लोकनाथ द्विवेदी—सिलाकारी 'श्रीहरि' —हर्षकुमार हर्ष 248
9. मेरे कवि-जीवन का मंगलाचरण —पद्मभूषण डॉ. रामकुमार वर्मा 251
10. देवरी के बब्बू चौबे—मस्तजी (सरस्वती के पूर्व सम्पादक) —डॉ. राधेश्याम दूबे 254
11. प्रेम कटारे : महुआ वारे महावीर —सुरेश आचार्य 260

खंड स
सागर : प्रमुख साहित्यिक हस्ताक्षर

1. सत्य का सूरज —ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी 273
2. वहम —विट्ठलभाई पटेल 277
3. गजल —अखलाक सागरी 278
4. गजल —यार मोहम्मद यार 279
5. गजल —मायूस सागरी 280
6. सागर—मेरा नगर बड़ा अलबेला —निर्मल चन्द निर्मल 281
7. पहली गजल —रमेशदत्त दुबे 284
8. तुम ऋचा हो —शिवकुमार श्रीवास्तव 285
9. पिता —मणीकांत चौबे 'बेलिहाज' 286
10. बदल रही हैं परिभाषाएँ —श्याम मनोहर सीरोठिया 287

Scanned with OKEN Scanner

घना कुहर झकझोर रहा है सागर
लहरों पर फिर लहर चढ़ी आती है।
तारों ने अपनी आँखें मूँदी हैं,
मेघों की गर्जन भैरव गाती है।।
यहाँ अकेला हूँ मैं।।
रात रो रही है झंझा के आँसू
ज्योति-बिन्दु भी नहीं झलमला पाता।
केवल महासिन्धु का गर्जन-तर्जन,
आँसू की झर के सरगम में गाता।।
भीत, अकेला हूँ मैं।।
बीत गया तूफान सिन्धु मुसकाया;
रात जगी, आकाश हीरकन-मंडित।
सुन्दर लगती है नीलिमा अनामिल,
गाती गीत पवन फिर नंदित-नंदित।।
किन्तु अकेला हूँ मैं।

— डॉ. हरीसिंह गौर'
'Twilight' का हिन्दी रूपान्तर
अनुवादक — रामरतन भटनागर

अनुज्ञा बुक्स
दिल्ली - 110032

ISBN 978-93-89341-04-1
9 789389 341041
₹ 850

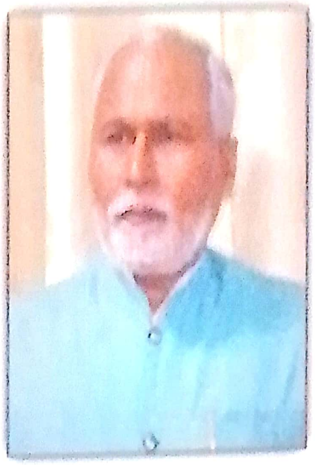

प्रो राघवेन्द्र प्रसाद तिवारी

जन्म तिथि – 01-01-1959

जन्म स्थान – सिरमौर जिला रीवा (म.प्र.)

शैक्षणिक योग्यता – एम.टेक., पी-एच.डी.

- हिन्दी, अंग्रेजी, मिजो भाषाओं पर अधिकार
- मिजोरम में प्रोफेसर रहे
- देश में अनेक संस्थाओं से सम्मानित
- अनेक पुस्तकें प्रकाशित
- सागर विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र एवं वर्तमान कुलपति

पता– गौर भवन, कुलपति निवास, कालीचरण चौराहा, 10 सिविल लाइन्स, सागर (म.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner